RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.07 | July 2021 | pp. 27-29
Double-Blind Peer Reviewed/ Refereed Journal

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

*डॉ. मनीता कौर विरदी

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, षा. महाविद्यालय बिछुआ जिला छिंदवाड़ा (म.प्र)

Abstract

ग्लोबल वार्मिंग 21वीं सदी का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है, जो हमारे वैष्विक समाज की संरचना को चुनौति देता है। ग्लोबल वार्मिंग, वातावरण में ग्रीन हाउस गैसो की भारी वृद्धि के कारण होता है। बिजली उत्पादन में जीवाष्म ईंधन का लगातार उपयोग किया जा रहा है। इन ईंधनों के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस आक्सॅाइड जैसी गैसे निकलती है जिससे ग्लोबल वार्मिंग का खतरा लगातार पृथ्वी के पर्यावरण को बड़ा नुकसान पहुंचा रहा है। उर्जा के नवीनकरणीय स्त्रोतों को खोजना और उनका उपयोग करना आवष्यक हो गया है। इन्ही समस्याओं के समाधान खोजने का एक छोटा सा प्रयत्न इस षोध पत्र में किया गया, कैसे और क्यों परिवर्तन हो रहे है। जलवायु परिवर्तन के पूर्वानुमानित प्रभाव को देखना, खोज करना, प्रस्तावित समाधानों की व्याख्या करना।

Keywords: *ग्लोबल वार्मिंग, तापमान, जलवायु परिवर्तन।*

Article Publication

Published Online: 15-Jul-2021

***Author's Correspondence**

डॉ. मनीता कौर विरदी

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, षा. महाविद्यालय बिछुआ जिला छिंदवाड़ा (म.प्र)

drmanitakaurvirdi@gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i07.005

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना–

ग्लोबल वार्मिंग या वैष्विक तापमान बढ़ने का मतलब है कि पृथ्वी लगातार गर्म होती जा रही है। वैज्ञानिको का कहना है कि आने वाले दिनों में सूखा की समस्या बढेगी, बाढ़ की घटनायें बढेगी और मौसम का मिजाज पूरी तरह बदला हुआ दिखेगा। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन औसत वैष्विक तापमान में वृद्धि को संदर्भित करते है। माना जाता है कि प्राकृतिक घटनाओं और मानवीय गतिविधियों को औसत वैष्विक तापमान में इस तरह की वृद्धि का मुख्य कारण माना जाता है। जलवायु परिवर्तन, वाहनों, कारखानों और बिजली स्टेषनों से कार्बन डायआक्सॅाइड के बढ़ते उत्सर्जन के कारण, न केवल वायु मंडल और समुद्र को प्रभावित करेगा, बल्कि पृथ्वी के भूविज्ञान को भी बदल देगा। जीवाष्म उर्जा के हमारे उपयोग के कारण कार्बन डायआक्सॅाइड के उर्त्सजन से जलवायु बदलाव होगा। आईपीसीसी की भविष्यवाणी के अनुसार हमारे मौजुदा औसत तापमान में 1.7 डिग्री सेल्सियस की जबरदस्त वृद्धि है। इससे हमारी सभ्यता में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के बदलाव हो सकते है, लेकिन वर्तमान में हमारे समाज पर कुल प्रभाव बहुत अनिष्चित है। ग्रीन हाउस गैसों के कारण ''उबलते और मंथन'' प्रभाव के कारण हमारा वातावरण गर्म, अधिक अषांत और अधिक अप्रत्याषित हो रहा है। ग्लोबल वार्मिंग 21 वी सदी का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है, जो हमारे वैष्विक समाज की संरचना को चुनौति देता है। पृथ्वी के तापमान में हो रही वृद्धि (जिसे 100 सालों के औसत तापमान पर 01डिग्री फारेनहाइट आंका गया है, के परिणाम स्वरूप बारिष के तरिकों में बदलाव, हिमखंडों और ग्लेषियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जंतु जगत पर प्रभावों के रूप में सामने आ सकते है।)

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत षोध का अध्ययन क्षेत्र ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों पर केंद्रित है।

अध्ययन के उद्देष्य–

- लोगों को जागरूक करना।
- उन माध्यमों का पता लगाना जिससे पृथ्वी को गर्म होने से बचाया जा सके।
- प्रकृति को बचाने के लिए प्रयास करना।
- जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय पादप और जीव जंतुओं की प्रजातियों को समाप्त होने से रोकना।

आंकड़ो का संकलन–

द्वितीयक संमको का संकलन, पत्र–पत्रिकाओं तथा इंटरनेट आदि के माध्यमों से तथ्य संकलित किये गये।

प्रविधि–

प्रस्तुत षोध पत्र में ग्रंथालय अध्ययन पद्धति के साथ विष्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया।

विष्लेषण–

ग्रीन हाउस गैसें वह गैस होती है जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेष कर यहां का तापमान बढ़ाने में कारण बनती है। वैज्ञानिको के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन यदि इसी प्रकार चलता रहा तो 21 वीं षताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम घातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बिछी बर्फ की चादरें पिघल जाएगी। समुद्र का जल स्तर कई फीट उपर तक बढ़ जाएगा। इससे दुनिया के कई हिस्से जलमग्न हो जाएगें, भारी तबाही होगी। यह तबाही किसी विष्वयुद्ध या किसी 'ऐस्टेराइॅड' के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिए भी यह स्थिति बहुत हानिकारक होगीं। ग्रीन हाउस गैसो के उत्सर्जन से उष्ण कटिबंधीय रेगिस्तानों में नमी बढ़ेगी। मैदानी इलाकों में भी इतनी गर्मी पड़ेगी जिनती कभी इतिहास में नहीं पडी। इसी वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियां पैदा होगी। वर्तमान में विष्व ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते सवालों से जूझ रहा है। इस सवाल का जवाब जानने के लिए विष्व के अनेक देषों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग और खोजें हुई है। उनके अनुसार अगर प्रदूषण फैलने की रफ्तार इसी तरह बढ़ती रही तो अगले दो दषकों में धरती का औसत तापमान 0.3 डिग्री सेल्सियस प्रति दषक के दर से बढेगा, जो चिंताजनक हैं। संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों ने 2015 तक नई जलवायु संधि कराने के लिए पहला कदम उठाया था, और इस बात पर बातचीत षुरू की है कि वे किस तरह इस लक्ष्य को पूरा करेगें। यह संधि विकसित और विकासषील देषों पर लागू होगी। जिसे 2020 तक लागू कर दिया जायेगा।

वैज्ञानिको और पर्यावरणविदों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए मुख्य रूप से सी.एफ.सी गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा और इसके लिए फ्रिज, एयर कंडीषनर और दूसरे कूलिंग मषीनों का इस्तेमाल कम करना होगा या ऐसी मषीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी गैसें कम निकलती है। अक्षय उर्जा के उपायों पर ध्यान देना होगा। यानि अगर कोयले से बनने वाली बिजली के बदले पवन उर्जा, सौर उर्जा, और पनबिजली पर ध्यान दिया जाए तो वातावरण को गर्म करने वाली गैसों पर नियंत्रण पाया जा सकता है तथा साथ ही जंगलों में आग लगने पर रोक लगानी होगी। इंटरगवर्नमेंट पैनल ऑन क्लाइमेंट चेंज ¼IPCC,2007) के अनुसार ''20 वीं सदी के मध्य के बाद से जलवायु प्रणाली के उर्जा संतुलन में परिवर्तन को दर्षाता है, अर्थात् आने वाले सौर विकिरण और पृथ्वी से निवर्तमान अवरक्त विकिरण के बीच सापेक्ष संतुलन में परिवर्तन को दर्षाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार 28 जुलाई 2010 को राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रषासन (एन.ओ.एए) की बैठक के दौरान सबसे गर्म समय दर्ज किया गया था। 1992 में रिया अर्थ समिट में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेषन के हस्ताक्षर और 2005 में क्योटो प्रोटोकॉल में भी चर्चा की गई। प्राकृतिक वातावरण के साथ–साथ मानव समाजों और हमारी अर्थव्यवस्थाओं पर पडने वाले महत्वपूर्ण और व्यापक प्रभावों को इंगित करता है। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप जलवायु घटनाएं–तूफान, बाढ़, सूखा आदि बढ़ेगा। उच्च दर, सुनामी और अन्य प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि के कारण, मरने वालों की संख्या बढ़ जाएगी। वैष्विक बदलाव से कई पौधों और जीव–जनतुओं के आवासों

का नुकसान होगा है। इस मामले में जीव–जंनतुओं को अपने प्राकृतिक आवास से पलायन करने की आवष्यकता होती है और उनमें से कई विलुप्त हो जाते है। यह जैव विविधता पर ग्लोबल वार्मिंग का बडा प्रभाव है, जंगल की आग बडी मात्रा में कार्बन युक्त धुएं का उत्सर्जन करती है। इन गैसों को वायुमंडल में छोडा जाता है, और पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग बढती जाती है। वाहन जीवाष्म ईंधन जलाते है जो कार्बन डॉइआक्॔साइड और अन्य विषाक्त पदार्थो की एक बडी मात्रा को वातावरण में उत्सर्जित करते है जिसके परिणामस्वरूप तापमान में वृद्धि होती है। कारखानों से निकलने वाला हानिकारक उत्सर्जन पृथ्वी के बढ़ते तापमान को बढ़ाता है। ज्वालामुखी ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे बडे प्राकृतिक कारक है। ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान उत्सर्जित राख और धुंआ वायुमंडल में चला जाता है, और जलवायु को प्रभावित करता है। पिछले 100 वर्षो में औसत वैष्विक तापमान में 0.74^0ब की वृद्धि, 40 मिमि से अधिक के समुद्र स्तर में वृद्धि, मौसम में महत्वपूर्ण बदलाव आर्कटिक समुद्री बर्फ का पीछे हटना और लगभग सभी महाद्वीपीय षामिल है।

निष्कर्ष–

ग्लोबल वार्मिंग एक बड़ा खतरा है और इनसे निपटने के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए। यह समस्या केवल मनुष्यों की ही नहीं बल्कि जीव–जन्तुओं के लिए भी है। ध्रुवीय आइस लैंड़ के पिघलने से बाढ़ आ जाएगी तो हर जगह तबाही का कारण बन सकता है। समुद्र का बढता जल स्तर कृषि और मछली पकड़ने की गतिविधयों को नष्ट कर देगा। यह पारिस्थितिक तंत्र को गंभीर रूप से प्रभावित करेगा और पर्यावरण संतुलन को बिगाड देगा। ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु परिस्थितियों में बदलाव आया है। कुछ स्थानों पर बाढ़ है तो कुछ स्थानों पर सूखा है। ग्लोबल वार्मिंग से ताप और आर्द्रता के पैटर्न में बदलाव आता है। अतः उपर्युक्त घटनाओं से निपटने के लिए लोगों में जागरूकता एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। हमें अपनी पृथ्वी को सही मायनों में ''ग्रीन'' बनाना होगा। अपने 'कार्बन फुटप्रिंटस ;प्रतिव्यक्ति कार्बन उत्सर्जन को मापने का पैमानाद्ध को कम करना होगा।

सुझाव–

- वन संपदा की अंधाधुध कटाई को रूकवाना होगा,जिससे पर्यावरण संरक्षित रहे।
- ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाना होगा।
- समुद्र के बढ़ते जल स्तर को रोकना।
- अम्लीय वर्षा के बढ़ते प्रभाव को रोकना
- बाढ़ –सूखा जैसी आपदाओं को रोकना।
- जलवायु परिवर्तन से बढ़तें मरूभूमि क्षेत्रों की वृद्धि को निंयत्रित करना।
- आस–पास के वातावरण को प्रदूषण से जितना मुक्त रखेगें, इस पृथ्वी को बचाने में उतनी बड़ी भूमिका निभाएंगें।
- वृहद विकास योजनाओं को षुरू किया जाना चाहिए ताकि बडे पैमाने पर विकास हो सके।

संदर्भ–

- मणि दिनेष *''ग्लोबल वार्मिंग''* सत्साहित्य प्रकाषन, 2015 नई दिल्ली
- षर्मा ष्याम सुन्दर '' *ग्लोबल वार्मिंग कारण और निराकरण''* पब्लिषर्स षिलालेख 2013
- मेहता डॉ रमा *''जल चेतना''* तकनीकी पत्रिका'' जनवरी 2014
- www.intechopen.com
- www.bigmelt.com
- www.epa.gov